

गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियाँ और बैड बैंक की अवधारणा का औचित्य

भूमिका

गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियाँ (non-performing assets-NPA) किसी भी अर्थव्यवस्था के लिये बोज़ हैं। ये देश की बैंकगि व्यवस्था को सुगुण बनाते हैं। गौरतलब है कि पिछले कुछ वर्षों से 'बैड लोन' (खराब ऋण) और 'बैड एसेट' (खराब परसिंपत्तियाँ) में बेतहाशा वृद्धि हुई है, वदिति हो कि बैड लोन और बैड एसेट से ही मलिकर बनती हैं 'गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियाँ'। बैड लोन से बैंको के लाभांश में कमी आती है, फलस्वरूप बैंक के लिये ऋण देना मुश्किल हो जाता है। बैंको की साख दर में लगातार गरीबट, वर्तमान में एक महत्त्वपूर्ण चिंता बनी हुई है। गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों की समस्या से निपटने के लिये हाल के वर्षों में एक नई अवधारणा निकलकर सामने आ रही जिसका नाम है 'बैड बैंक'। कहते हैं 'भूत से सबक लेकर व्यक्तिको वर्तमान में भवषिय का चिंतन करना चाहिये' अर्थव्यवस्था की तमाम बातों पर यह उक्ति लागू होती है और बैड बैंक की अवधारणा भी इससे अछूती नहीं है। अतः पहले यह समझते हैं कि अब तक गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों की समस्या का समाधान हमने कैसे किया है? तत्पश्चात् हम यह देखेंगे कि भारत को गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के दलदल से निकालकर विकास-पथ पर ले जाने में बैड बैंक कहाँ तक सार्थक है?

बैंक कैसे करते हैं गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों का प्रबंधन?

- यदि लेनदारों द्वारा तय समय पर ऋण नहीं चुकाया जाता है तो बैंक ऋण के बदले गरिबी रखी गई सम्पत्तिको ज़ब्त कर सकता है और फिर उस सम्पत्तिको बेच सकता है। गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों की गंभीर होती समस्या के समाधान के लिये भारतीय रज़िर्व बैंक ने सामरिक ऋणपुनर्र्गठन (Strategic Debt Restructuring-SDR) योजना शुरू की थी। एसडीआर के तहत यदि कोई कंपनी या संस्था ऋण नहीं चुका पा रही है तो उन डफाल्टर कंपनियों के प्रबंधन में बैंक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। यहाँ तक कि एसडीआर योजना के तहत बैंक, कंपनी के प्रमोटर्स को भी बदल सकते हैं।
- बैंक, बैड लोन का पुनर्र्गठन भी कर सकते हैं जिससे कालेनदारों को उधार चुकाना थोड़ा आसान हो जाए। बैंक, गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों को डसिकाउंट पर परसिंपत्ति पुनर्र्गठन कंपनियों को भी बेचकर स्वयं का ऋण चुकता कर सकते हैं।

गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के प्रबंधन में आने वाली दकिकतें

- परसिंपत्तियों के ज़बती के माध्यम से स्वयं का ऋण चुकता करना बैंको के लिये प्रायः फायदेमंद नहीं होता क्योंकि ज़बत की गई परसिंपत्तियों को प्रायः कम दाम पर बेचना पड़ता है जो कि दिये गए ऋण की तुलना में बहुत ही कम होती है। भारत में एसडीआर योजना अभी तक सुचारू ढंग से आरम्भ नहीं हो पाई है, इसका कारण यह है कि भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको का कंपनियों के प्रबंधन का कोई अनुभव नहीं है और यह उनके लिये एक दुष्कर कार्य है कि कंपनियों का बेहतर प्रबंधन कर वे अपने ऋण की लागत वसूल कर सकें।
- गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के पुनर्र्गठन में दो समस्याएँ हैं। पहली यह कि हो सकता है बैंक के प्रबंधक अवैध तरीके से कुछ कम्पनियों के गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों का मूल्य बहुत ही कम कर दें ताकि वे अवैध लाभ कमा सकें। दूसरी समस्या यह है कि यदि गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों को डसिकाउंट दर पर बेचा जाता है तो सीधे इसका असर बैंको के लाभांश पर देखने को मल्लिगा।

क्या है बैड बैंक?

- 'बैड बैंक' एक आर्थिक अवधारणा है जिसके अंतर्गत आर्थिक संकट के समय घाटे में चल रहे बैंको द्वारा अपनी देयताओं को एक नए बैंक को स्थानांतरित कर दिया जाता है। ये बैड बैंक कर्र्ज में फँसी बैंको की राशिको खरीद लेगा और उससे निपटने का काम भी इसी बैंक का होगा।
- जब किसी बैंक की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियाँ सीमा से अधिक हो जाती हैं, तब राज्य के आश्वासन पर एक ऐसे बैंक का निर्माण किया जाता है जो मुख्य बैंक की देयताओं को एक निश्चित समय के लिये धारण कर लेता है।

बैड बैंक का सदिधांत स्वागत योग्य क्यों?

- बैड बैंक की चर्चा केंद्र में इसलिये है क्योंकि इस बार के आर्थिक सर्वेक्षण में बैड बैंक का जिक्र किया गया है। हाल ही में नीति आयोग के उपाध्यक्ष अरवि पानगढ़िया ने भी डूबते कर्र्ज से निपटने के लिये बैड बैंक को बेहद जरूरी बताया है।
- वदिति हो कि बैड बैंक एआरसी यानी परसिंपत्ति पुनर्र्गठन कंपनियों की तरह काम करेगा। बैड बैंक, एक ऐसा बैंक होगा जो दूसरे बैंको के डूबते कर्र्ज को खरीदेगा। ध्यातव्य है कि बैड बैंक का नाम 'पब्लिक सेक्टर एसेट रैबिलिटेशन एजेंसी' यानी पीएआरए होगा और यह प्रयोग जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस जैसे देशों में सफल रहा है।
- दरअसल बैंको (खासकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको की) की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियाँ तेजी से बढ़ी हैं। वतित वर्ष 2017 की पहली छमाही में

कुल गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों बढकर 6.7 लाख करोड रुपये पर पहुँच गई हैं। बैंकों के कुल ऋण का करीब 9.7 फीसदी गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों में तबदील हो चुका है और करीब 80 फीसदी गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हैं।

- बैड बैंक के आने से दूसरे बैंकों से डूबते करज़ को वसूलने का दबाव हट जाएगा। दूसरे बैंक नए ऋण देने पर ध्यान केन्द्रति कर पाएंगे। बैंकों को अपने डूबते करज़ बैड बैंक को बेचने की सुवधि मल्लिगी। डफाल्टर कंपनियों की संपत्ति बेचने के काम में तेजी आएगी। बैंक अधिकारी परसिंपत्तियों की ज़बती की जगह बैंकगि गतविधियों को सुचारू ढंग से चला पाएंगे।

बैड बैंक से संबंधति समस्यारूँ ?

- बैड बैंक की स्थापना में सबसे बड़ी समस्यारूँ बैक में हसिसेदारी को लेकर है। यह जानना दलिचस्प है कि समस्यारूँ नजिी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों के अधिकितम भागीदारी से है। यदि बैड बैंक में सरकार की हसिसेदारी अधिक हो तो बैंकों की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियूँ इतनी अधिक हो गई है कि बैड बैंक के माध्यम से इनकी खरीद पर सरकार को उललेखनीय व्यय करना पड सकता है। साथ ही एक सरकारी बैड बैंक को उन्हीं समस्यारूँ का सामना करना पडेगा जनिका सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के सन्दर्भ में कर रहे हैं।
- यदि बैड बैंक को नजिी क्षेत्र के हवाले कर दिया गया तो सबसे बड़ी समस्यारूँ गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के मूल्य को लेकर हो सकती है। नजिी क्षेत्र का बैड बैंक अपने लाभ को ध्यान में रखते हुए गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों का मूल्य तय करेगा। यदि यह मूल्य बहुत अधिक हुआ तो बैड बैंक का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा और यदि यह मूल्य बहुत ही कम हो गया तो बैंकों को उनकी ऋण देयता के अनुपात में राशानिही मलि पाएगी।

नष्कष

- बैड बैंक नष्कति ही अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने वाला कदम प्रमाणति हो सकता लेकिन सर्वप्रथम बैड बैंक की स्थापना नजिी इक्विटी फंड की तरह करनी होगी जसिमें सरकार की हसिसेदारी 50% अधिक नहीं हो। इन बैंकों में अलग-अलग बैंकों के ऐसे वशिषज्जों को रखा जाए जो अलग-अलग बैंकों की बैड एसेट का प्रबंधन और पुनर्गठन कर सकें। बैड बैंक को केन्द्रीय सतर्कता आयोग या सीबीआई जैसी कसिी बाह्य नगिरानी व्यवस्था के अंतर्गत लाने के बजाय कसिी आंतरिक सतर्कता टीम के तहत रखा जाए जो कबैंकगि से संबंधति हो।
- गौरतलब है कएक तरह से डूबी संपत्ति को पुनर्जीवति करना या प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। बैड बैंक के प्रस्तावति ढाँचे के अनुरूप अगर सब कुछ सही चलता रहा, तो नजिी नविशक को बैंकों की इक्विटी में नविश करने के लयि प्रोत्साहन मल्लिगी। ये नजिी नविशक इन बैंकों की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के लयि स्वतंत्र बोली लगा सकेंगे।
- बैड बैंक एक उद्देश्यपूर्ण संकल्पना है लेकिन इन सभी उपायों से ही बैड बैंक अपने उद्देश्य की प्राप्त में सफल हो पाएगा।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/non-performing-assets-and-concept-of-bad-bank>

